श्री आत्मसिद्धि शास्त्र सत्संग

मोहनीय-कर्म — एक परिपूर्ण दृष्टिकोण

(गाथा 102-103-104)

क्रम	विशेषता	सामान्य जैन दृष्टि	अध्यात्म दृष्टि
1	**विषय**	मोहनीय कर्म (Delusion)	अहंकार (Ego)
2	**अभिव्यक्ति**	पुद्गल (particle)	पर्दा (veil)
3	**प्रमुख मार्ग**	मोहनीय कर्म से मुक्ति का मार्ग (सम्यक् दर्शन-ज्ञान-चारित्र)	ईश्वर से मिलन का मार्ग (वैराग्य, जिज्ञासा, प्रार्थना, प्रवाह-अवस्था, लौटाना, पवित्र मिलन)
4	**बोध प्रवाह**	जीव और जगत	जीव, जगत और जगदीश
5	**प्रमुख बाधा**	एकत्व बुद्धि - शरीर और आत्मा को एक मानना)	दुई बुद्धि - मैं और 'तू' को अलग मानना
6	**समाधान**	**भेद-विज्ञान** यानी देह-आत्मा को भिन्न करते रहना	**ईश्वर-प्रधान** यानी स्वयं को ईश्वरीय मौजूदगी में समर्पित करते रहना
7	**प्रयोग**	ज्ञात द्रष्टा भाव स्वयं के शुद्ध-बुद्ध-मुक्त-स्वरूप का स्मरण विवेक का विस्तार सहज सजगता	अकर्त्ता भाव कृपाधीनता आंतरिक बोध की गहराई सहज समर्पण

व्यावहारिक प्रयोग

1. सत्संग श्रवण-मनन-निदिध्यासन
2. अशुभ भाव के समय दृष्टा भाव
3. अशुभ कर्म के समय खेद-पश्चाताप-प्रायश्चित
4. शुभ भाव के समय ईश्वर को धन्यवाद
5. शुभ कर्म के समय ईश्वर के प्रति समर्पण
6. हृदय केंद्र के आसपास स्मरण की प्रगाढ़ता
7. आंतरिक मौन और प्रतीक्षा का धैर्य